घोषणा पत्र/प्रमाण पत्र

मैं **दीपाली कुजूर** घोषणा करती हूँ कि हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में एम.फिल उपाधि हेतु "**मोहन राकेश के नाटकों में नायक**" विषय पर **डॉ. उमेश कुमार सिंह**, सहायक प्रोफेसर के नियमित शोध-निर्देशन में मैंने अपना लघु शोध प्रबंध पूरा किया है।

यह मेरा मौलिक शोध कार्य है। मेरी अधिकतम जानकारी के अनुसार अप्रकाशित अप्रसारित शोध-प्रबंध है। यह लघु शोध-प्रबंध है। यह लघु शोध–प्रबंध किसी संस्था, विश्वविद्यालय की किसी भी उपाधि हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया है और न ही मेरे ज्ञान में इस विषय पर किसी भी शोधार्थी को एम.फिल या अन्य शोध उपाधि प्राप्त हुई है।

शोधार्थी

दीपाली कुजूर

पंजीयन सं. 2014/02/215/013

हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग

म.गां.अ.हि.वि.वि, वर्धा

(महाराष्ट्र)

शोध निर्देशक

डॉ. उमेश कुमार सिंह

(सहायक प्रोफेसर)

हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग

म.गां.अ.हि.वि.वि, वर्धा

(महाराष्ट्र)

भूमिका

"**मोहन राकेश के नाटकों में नायक**" मेरा एक सहज प्रयास है जिसके माध्यम से मैं राकेश लिखित मुख्य नाटकों के पुरूष पात्र को समझने का प्रयास की हूँ| यद्यपि राकेश लिखित नाटकों में निहित भाव को समझना उतना आसान नहीं फिर भी जहाँ तक हो सका है उनके अन्दर निहित भावों को मैंने छूने का प्रयास किया है|

राकेश ऐसे साहित्यकार हैं जिन्होंने मानव जीवन की वेदना को सहते हुए अपने साहित्य में उस वेदना को, द्वन्द्व का स्वर देते हुए प्रकट करने का सफल प्रयास किया है और वे पूर्ण रूप से सफल भी हुए हैं| मैंने अपने लघु शोध प्रबंध में इनके नाटकों के पुरुष पात्र की वेदना को उभारने का प्रयास किया है| साथ ही नाटकों में उपस्थापित चरित्रों, मनोभावनाओं, अनुभूतियों, क्रिया-कलापों, व्यवहारिक अभियोजन, चिंतन करते हुए, मैंने अपना नजरिया पेश करने की कोशिश की है। इस लघु शोध प्रबंध के माध्यम से राकेश लिखित नाटकों को एक साथ संकलित करते हुए उनका संक्षिप्त परिचयात्मक स्वरूप प्रस्तुत करने का प्रयास भी किया गया है। यह शोध एक संक्षिप्त एवं समन्वित प्रस्तुति है, जिसके माध्यम से राकेश की जीवन शैली, कलात्मक गुण, लेखन वैशिष्टय, वैयक्तिक दृष्टिकोण तथा उनकी साहित्य-साधना की संक्षिप्त किन्तु ठोस झलक मिल सकती है।

समाज में रहने वाला व्यक्ति जब किसी साहित्यिक कृति का पाठ करता है, तो वह अपने आप को कहीं न कहीं उसमें ढूंढने की कोशिश करता है। समरसता होने के कारण वह उसमें पूरी तरह डूब जाता है और कभी-कभी तो बार-बार उसका पाठन करने को मन करता है। मोहन राकेश ऐसे नाटककार हैं। जिन्हें पाठक बार-बार पढ़ना चाहता है। साहित्य की सभी विधाओं में इन्होंने अपनी लेखनी चलाई है लेकिन

जितनी उपलब्धि इन्होंने नाटककार के रूप में प्राप्त किया है वह किसी और विधा में नहीं | राकेश ने अपने जीवन से जो पाया जो समझा उसी के आधार पर नाटकों को अभिव्यक्ति प्रदान की है |

मोहन राकेश से पूर्व हिंदी में श्रेष्ठ और महत्वपूर्ण नाटक लिखे गए हैं। भारतेदुं हरिशचन्द्र के नाट्य लेखन एवं रंगकर्म ने आधुनिक हिंदी रंगमंच की स्टीक शुरूआत की थी। उनके बाद जयशंकर प्रसाद के नाटकों ने इस विधा को काव्यात्मकता, दार्शनिकता और कलात्मकता देकर नयी गरिमा और प्रतिष्ठा प्रदान की। लक्ष्मीनारायण मिश्र ने इसे समकालीन यथार्थ से जोड़कर सामान्य व्यक्ति की समस्याओं के चित्रण का माध्यम बनाया है। लेकिन मोहन राकेश ने आधुनिक हिंदी नाटक को एक नयी दिशा, नयी दृष्टि, नई भाषा प्रदान की है। जून 1958 ई. में प्रकाशित मोहन राकेश का नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' आधुनिक हिंदी नाटक और रंगमंच के नये आंदोलन के श्रीगणेश का सबसे पहला विशिष्ट महत्वपूर्ण प्रमाण है। यह नाटक आधुनिक हिंदी नाटक की श्रेष्ठ उपलब्धियों में एक है। मोहन राकेश नाटककार के साथ-साथ कहानीकार, उपन्यासकार भी रहे हैं।

मोहन राकेश ने अपने साहित्य में पुरूष-पात्रों के चेतन, उपचेतन और अचेतन मन के सभी स्तर जैसे राग-विराग, आसक्ति अनासक्ति, स्वीकार, अस्वीकार, ग्रहण, त्याग, युग त्रासदी और उससे उत्पन्न पीड़ा का यथार्थ और विश्वसनीय अंकन किया है। और राकेश ऐसे साहित्यकारों की अंग्रिम पंक्ति में आते हैं, जिन्होंने मानव जीवन की वेदना को भोगा और अपने साहित्य में उस वेदना को, द्वन्द का स्वर देते हुए प्रकट करने का सफल प्रयास किया है। राकेश ने अपने नाटकों में स्त्री जीवन के साथ-साथ पुरूष जीवन के अनेक रूपों, अनेक स्थितियों और अनेक जटिल समस्याओं को स्थान दिया है। मोहन राकेश द्वारा लिखित नाटकों में पुरूष स्थिति को पढ़ने के बाद जिज्ञासा अनुभव हुई कि क्यों न मोहन राकेश के नाटकों के नायक को ही शोध का विषय बनाया जाए।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध को अध्ययन की सुविधा के लिए छ: अध्यायों में विभाजित कर विवेचन और विश्लेषण किया है। प्रत्येक अध्याय की संक्षिप्त रूपरेखा निम्नानुसार है-

प्रथम अध्याय:- मोहन राकेश का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

यह अध्याय मोहन राकेश के व्यक्तित्व और कृतित्व से सम्बन्धित है। इसके अंतर्गत जन्म, माता- पिता, भाई-बहन, शिक्षा दीक्षा, नौकरी, विवाह उनका आंतरिक एवं बाह्य व्यक्तित्व, मृत्यु आदि विभिन्न मुद्दों पर विवेचन किया गया है। और साथ ही साथ इसके अंतर्गत अनके साहित्यिक परिवेश के विविध मुद्दों को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। इसी क्रम में लेखन की विविध विधाओं का संक्षिप्त उल्लेख देते हुए उनके द्वारा लिखित कहानियों, नाटकों, जीवनी, उपन्यासों को काल-क्रम के अनुसार प्रस्तुत किया गया है | इसके अंतर्गत उनके चारों नाटकों का उल्लेख भी किया गया है।

द्वितीय अध्याय:- मोहन राकेश के नाटकों का सामाजिक परिवेश

इस अध्याय के अंतर्गत उनके नाटकों का सामाजिक परिवेश को लेकर विस्तृत दृष्टि से विवेचन किया गया है। इस अध्याय को तीन भागों में विभाजित किया गया है। पहले भाग में आर्थिक परिवेश का अध्ययन किया गया है | दूसरे भाग में पारिवारिक परिवेश और तीसरे भाग में राजनीतिक परिवेश का अध्ययन किया गया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिए गए हैं।

तृतीय अध्याय:-मोहन राकेश के नाटकों का परिचयात्मक अध्ययन

इस अध्याय के अंतर्गत नाटककार मोहन रकेश के नाट्य कृतियों का परिचयात्मक अध्ययन किया गया है, जिसमें- 'आषाढ़ का एक दिन', 'लहरों के राजहंस', 'आधे-अधूरे', 'पैर तले की जमीन' हैं।

चतुर्थ अध्याय:- मोहन राकेश के नाटकों में पुरूष पात्र योजना

इस अध्याय को सुविधा और स्पष्टता के उद्देश्य से चार भागों में विभाजित किया गया है। पहले भाग में पात्र-निर्माण के अनिवार्य तत्व के अंतर्गत क्रियाशीलता, प्रतिक्रियावादिता, पारम्परिक विरोध, चयन एवं संतुलन, विश्वसनीयता एवं भावुकताहीनता, पात्रगत संघर्ष के आयाम आदि का अध्ययन किया गया है। दूसरे भाग में मोहन राकेश के नाटकों के प्रसिद्ध पात्र के अंतर्गत 'आषाढ़ का एक दिन', 'लहरों के राजहंस', 'आधे-अधूरे', 'पैर तले की जमीन' के प्रसिद्ध पात्रों का अध्ययन किया गया है। तीसरे भाग में मोहन राकेश के नाटकों में पुरूष पात्र के अंतर्गत 'कालिदास', 'विलोम', 'नन्द', 'श्यामांग', 'श्वेतांग', 'महेन्द्रनाथ', 'अशोक', 'सिंघानिया', 'जगमोहन', 'जुनेजा', 'अयूब' काअध्ययन किया गया है। चौथे भाग में रंगमंचीय दृष्टि से मोहन राकेश के पुरूष पात्र के अंतर्गत 'कालिदास', 'विलोम', 'नन्द' 'श्यामांग', 'श्वेतांग', 'महेन्द्रनाथ', 'अशोक', 'सिंघानिया', 'जगमोहन', 'जुनेजा', 'अयूब' का अध्ययन किया गया है।

पंचम अध्याय:- मोहन राकेश के नाटकों में नायक

इस अध्याय के अंतर्गत मोहन राकेश के चारों नाटकों के नायकों का अध्ययन किया गया है जिसमें 'कालिदास'(आषाढ़ का एक दिन), 'नन्द'(लहरों के राजहंस), 'महेन्द्रनाथ'(आधे-अधूरे), 'अयूब'(पैर तले की जमीन) है।

उपसंहार

इस अध्याय के अंतर्गत निष्कर्षों की प्रस्तुति को प्रस्तुत किया गया है। परिशिष्ट में आधार ग्रंथ एवं संदर्भ ग्रंथ की सूची दी गई है।

आभार

मैंने अपने इस शोध कार्य को **आदरणीय गुरूवर डॉ. उमेश कुमार सिंह** के शोध निर्देशन में रहकर पूरा किया है। आपका निरंतर मार्गदर्शन और प्रेम मुझे प्रेरणा देता रहा है। और मैं आपके प्रति सदैव आभारी रहूँगी।

प्रस्तुत शोधकार्य में आंरभ से लेकर प्रस्तुतिकरण तक मेरे समक्ष कई समस्याएँ आती रही है, इसमें समय-समय पर मुझे **आदरणीय गुरुवर प्रो. सूरज पालीवाल (विभागाध्यक्ष, हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग)** तथा हमारे विभाग के **आदरणीय गुरुवर डॉ. कृष्ण कुमार सिंह** ने मेरे शोध कार्य की समस्याओं को दूर करने में सहयोग तो दिया ही, साथ ही मेरा उत्साह वर्द्धन भी किया है। मैं आप लोगों के प्रति सदैव आभारी रहूँगी।

मैं अपने **आदरणीय पिताजी श्री फ्रांसिस कुजूर** और **माताजी श्रीमती रिजीना एक्का** का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ। कि आपने जीवन की पीड़ा सहते हुए भी मुझे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में एम.फिल. करने का सौभाग्य प्राप्त करवाया। जीवन के इस सफर में मेरे माताजी-पिताजी सदैव मुझे आपका स्नेह ऐसे ही मिलते रहे। ताकि मैं आने वाले भविष्य में भी आपके नाम को उच्च शिखर पर ले जा सकूँ। और मैं सदैव आप लोगों के चरणों में नतमस्तक रहूँगी।

मैं उन सभी साहित्यकारों की भी आभारी हूँ, जिनके साहित्य का उपयोग मैंने इस शोध कार्य के लिए किया है।

निष्कर्षत: मैं उन सभी गुरूवरों का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से मुझे शोध कार्य के लिए उत्साह वर्द्धन किया|

विषयानुक्रमणिका

	पृष्ठ सं.
प्रथम अध्याय : मोहन राकेश का व्यक्तित्व एवं कृतित्व	**8-18**
द्वितीय अध्याय: मोहन राकेश के नाटकों में सामाजिक परिवेश	**19-33**
2.1 आर्थिक परिवेश	
2.2 पारिवारिक परिवेश	
2.3 राजनीतिक परिवेश	
तृतीय अध्याय: मोहन राकेश के नाटकों का परिचयात्मक अध्ययन	**34-50**
3.1 आषाढ़ का एक दिन	
3.2 लहरों के राजहंस	
3.3 आधे-अधूरे	
3.4 पैर तले की जमीन	
चतुर्थ अध्याय: मोहन राकेश के नाटकों में पुरूष पात्र योजना	**51-114**
4.1 पात्र-निर्माण में अनिवार्य तत्व	
4.2 मोहन राकेश के नाटकों के प्रसिद्ध पात्र	
4.3 मोहन राकेश के नाटकों में पुरूष पात्र	
4.4 रंगमंचीय दृष्टि से मोहन राकेश के नाटकों के पुरूष पात्र	
पंचम अध्याय: मोहन राकेश के नाटकों में नायक	**115 -137**
5.1 कालिदास	
5.2 नन्द	
5.3 महेन्द्रनाथ	
5.4 अयूब	
उपसंहार	
संदर्भ- ग्रंथ सूची	

उपसंहार

मोहन राकेश के नाटकों के अध्ययन–विश्लेषण के बाद यह बड़ी आसानी से अपने तीव्रतम रूप में महसूस किया जा सकता है कि राकेश का सामाजिक परिवेश, उनका परिपार्श्व उनके नाटकों में कलात्मक अभिव्यक्ति पाता रहा है। इससे एक कदम और आगे बढ़े, तो सच तो यह है कि राकेश की अपनी जिन्दगी उनकी कहानियों, उनके उपन्यासों और नाटकों में बार-बार दार्शनिक गाम्भीर्य के साथ उभरती रही है। इस कथन के स्पष्टीकरण के लिए आवश्यक है कि राकेश को नजदीक से देखने की कोशिश की जाए, और ऐसी थोड़ी कोशिश आरम्भ में की भी गयी है। "मोहन राकेश के जीवन में तो इतने उल्ट-फेर हुए हैं कि उनकी तह तक पहुँचे बिना या कम से कम उसकी गहराइयों को जाने बिना न तो उनके व्यक्तित्व का सही विश्लेषण किया जा सकता है और न उसकी आदतों, रूचियों और प्रतिक्रियाओं का सही निर्णयात्मक हल ही ढूँढा जा सकता है।

मोहन राकेश ने कहानियाँ लिखीं, उपन्यास लिखे और नाटक के क्षेत्र में ख्याति अर्जित की। उनकी कहानियों में उनके व्यक्तित्व की झलक को तलाश ने का प्रयास किया जाए तो असफलता की गुंजाइश कम ही होगी। राकेश ने अपनी रचनाओं में अनुभूत सत्य की ही अभिव्यक्ति की है। मोहन राकेश ने 'अन्तराल' और 'अंधेरे बंद कमरे' जैसे उपन्यासों की भी रचना की है और इनमें भी उनकी भटकन, उनकी तलाश और तृषा ही अभिव्यक्त हुई है।

नाटककार के रूप में मोहन राकेश को विशेष ख्याति मिली है। इसके कारण बहुत स्पष्ट है। राकेश का रंगमंच से जुड़ाव रहा है और राकेश ने नाटकों की रचना रंगमंच की सीमाओं और आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए किया है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी मोहन राकेश ने नाटक के लिए आलेखन की बारीकियों को बखूबी समझा और उनकी पहली नाट्यकृति सामने आयी-"आषाढ़ का एक दिन" ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित इस नाटक की ऐतिहासिकता बस इतनी ही है कि उसमें 'कालिदास' नाम आया है। 'इतिहास - प्रसिद्ध' कालिदास के व्यक्तित्व का आभास तो एक दो स्थलों पर ही हो पाया है नाटक में अंतर्द्वन्द्व पीड़ित, दुर्बल और अस्थिर, चित्र कालिदास वस्तुत: नाटककार की कल्पना से प्रस्तुत है। यह नाटक कालिदास के जीवन के अन्धकारमय पृष्ठों पर प्रकाश डालने का प्रयत्न है। कालिदास के माध्यम से नाटक कलाकार की सृजनात्मक प्रतिभा की समस्या को भी लेकर चला है।

कलाकार की सृजन क्षमता कब, क्यों और कैसे विकसित होने से इन्कार कर देती है और किस हद तक यह कलाकार की जानकारी में होता है और कितना जानकारी के अभाव में, यह सब इस नाटक में बड़ी कलात्मकता से अभिव्यक्त हुआ है। कालिदास का आत्मसंघर्ष कई स्थलों पर साफ तौर पर उभर कर आया है और यह राकेश के नाटक की आवश्यकता और मार्मिक स्थलों की परख- पहचान और समझ का ही परिणाम है कि अंतर्द्वन्द्व दर्शक – प्रेक्षक को जोड़ता है यह द्वन्द्व कालिदास के लिए बौझिल है, जरूरी भी, दर्शक के लिए उत्साह – वर्धक है। कालिदास उज्जयिनी जाने से पूर्व आशंकित है कि 'नयी भूमि उसकी प्रतिभा को उसकी सृजनात्मक क्षमता को सुखा देगी, कम कर देगी।' यह इसे स्वीकार नहीं कर पाता कि सृजन स्रोत सूख जाए और फिर उसकी अपनी महत्ता – सार्थकता भी है राजमुद्राओं से क्रीत होने के लिए नहीं है वह अपने ढंग से, आत्मसम्मान सहित जीने का आंकाक्षी है सुविधाएं उसे

आरामतलब बना सकती हैं। राजसत्ता को अपनाकर जीवन की विशालता से कट जाने की आशंका अगर कालिदास के मन में है तो यह उचित ही है।

राकेश ने पूरी कलात्मकता से कालिदास के द्वन्द्व को आधुनिक युगीन रचनाकारों के द्वन्द्व या तनाव से जोड़ा है। एक सूत्र है जो कालिदास और इस युग के कलाकारों को आबद्ध करता है या कम से कम जोड़ता है। पुरस्कार की राशि प्रकारान्तर से रचनाकार – सर्जक की सृजन क्षमता पर आक्रमण है। कलाकार अगर सुविधाभोगी हो जाए, उपभोग की आदत या लत उसे पड़ जाए तो उससे किसी सार्थक सृजनकर्म की उम्मीद नहीं की जा सकती। उसकी बेचैनी की हत्या की कोशिशें सुविधाओं और पुरस्कारों की उपलब्धता के माध्यम से की जाती है और राकेश ने इस सत्य को जाना – समझा था। उसके चिन्तन का परिणाम है 'आषाढ़ का एक दिन'। आलोचकों का आरोप हैं कि नाटक का कालिदास ढुलमुल व्यक्तित्व का स्वामी है। संकल्पविहीन कालिदास बड़ा कमजोर ही नजर आता है। इस पार या उस पार खड़ा आदमी मजबूती का भ्रम उत्पन्न कर सकता है लेकिन जूझने की शक्ति या इच्छा जिसमें है, उसकी मजबूती से इनकार नहीं किया जा सकता, फिर भी अगर कालिदास एक कमजोर व्यक्ति या पात्र के रूप में नजर आता है तो यहाँ हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि प्रथमत: और अन्तत: वह एक व्यक्ति है। वह देवता नहीं है, फरिश्ता नहीं है। अगर उसमें कुछ कमियाँ या खामियाँ है तो यह सहज स्वभाविक है। कालिदास की बालसखी और उसके काव्य की मूल प्रेरणा मल्लिका का व्यक्ति व बड़ा आकर्षक मनोरम है। त्याग, समर्पण और अखण्ड आस्था की प्रतीक बनी मल्लिका भावुक है। 'भावना में भावना का वरण' करने वाली मल्लिका अम्बिका के सुख का कारण नहीं बन पाती। आषाढ़ के पहले दूर- दूर तक उपत्यकाओं तक जाकर धारासार वर्षा में भीगती रही मल्लिका को समझाने की कोशिशों में अम्बिका अपने आपको बुरी तरह और पूरी तरह असफल पाती है। अम्बिका मल्लिका की माँ है और यथार्थ की जमीन पर खड़ी

है। मल्लिका की भावुकता, सपनों में खोये रहने की उसकी आदत उसको स्पष्ट अटपटी और तकलीफदेह गलती है। उसका मत है कि माँ का जीवन भावना नहीं कर्म है।

लहरों के राजहंस राकेश का दूसरा नाटक है। पति-पत्नी संबंधों के विश्लेषण के लिए एक पुरानी कथा को आधार बनाया गया है। 'लहरों के राजहंस' की 'कथावस्तु' का आधार है अश्वघोष रचित 'सौन्दरनन्द लहरों पर तैरते चंचल राजहंसों सी' स्थिति नन्द की है। वह विचलित है। भोग और त्याग के द्वन्द्व में जीता नन्द सुन्दरी के मोह-पाश से मुक्ति की आकांक्षा रखता है। वह जिससे भागना चाहता है, उसी के पास बार- बार लौट आता है और जिसके पास या जिसकी शरण में जाना चाहता है, वहाँ भी उसे चैन नहीं मिलने वाला यह वह जानता है। नाटक की धुरी है सुन्दरी। नन्द की पत्नी सुन्दरी नाटक की नायिका है और उसकी परिधि में नाटक के तमाम पात्र और प्रसंग घूमते दिखायी देते हैं। उसका सीधा-स्पष्ट विचार है कि नारी का आकर्षण पुरूष को पुरूष बनाता है और उसका अपकर्षण पुरूष को गौतम बुद्ध बना देता है। पति- पत्नी के सम्बधों का बारीक, सुक्ष्मता विश्लेषण नाटक में हुआ है, यह समर्थ रचनाकार की लेखन विषय को कितने जीवन्त, प्रभावशाली और विचारोत्तेजक रूप में प्रस्तुत कर सकती है, इसका उदाहरण है यह नाटक।

कई सार्थक प्रतीकों के माध्यम से अपनी बात स्पष्ट करने का प्रयास करते राकेश ने नाट्य भाषा का एक नयी धार और चमक दी है। राकेश ने नाट्य भाषा के कलात्मक गहरी परख पहचान राकेश में रही, यह इन नाटकों से गुजरते हुए कई-कई और पूर्णत: अनुभव किया जा सकता है।

समकालीन जीवन की अभिव्यक्ति राकेश के इस दूसरे नाटक के माध्यम से भी हुई है। पहले नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' में कलाकार का द्वन्द्व सामने आया, पुरस्कार और सुविधाओं के जरिये उसकी संघर्ष क्षमता को कुन्द करने की कोशिशों की सफलता सामने आयी, दूसरे नाटक 'लहरों के

राजहंस में नन्द ओर सुन्दरी के बहाने आधुनिकयुगीन पुरूष ओर नारी का पीड़ा बोध अभिव्यक्त हुआ और यह आवश्यक और अपेक्षित था।' इतिहास को जब तक वर्तमान से जोड़कर देखने की कोशिश न की जाए, सार्थकता से कोसों दूसर रहती है रचना। इस नाटक का स्वरूप ऐतिहासिकता कम और आधुनिक अधिक है। ऐतिहासिकता तो बहाना है, इस बहाने जो उभरकर सामने आया है, वह समसामयिक जीवन संघर्ष और इस दौर में जीते आम आदमी की यातना, यह नाटक काव्यात्मक दार्शनिकता से परिपूर्ण है। आधुनिक भावबोध की सशक्त अभिव्यक्ति इसमें हुई है।

सुन्दरी का 'अहं' नन्द के निर्बल से आहत होता है। वह नारी है अपने सौन्दर्य पर उसे पूरा विश्वास है नन्द को अपने आकर्षण में बाँधे रखने की पूर्ण क्षमता वह अपने वह रखती है। इस अनुभव को लेकर उसमें कोई द्वन्ध नहीं है। नन्द इस युग के दुविधा ओर तनावग्रस्त अनिर्बल की स्थिति में रहते – जीते आम आदमी का प्रतिनिधि पात्र बनकर आया है। पति- पत्नी के संबंधों का मनोविज्ञान 'लहरों के राजहंस' के बाद 'आधे- अधूरे' के माध्यम से अभिव्यक्ति पाता है इसकी कथा इतिहास आश्रित नहीं है इतिहास के माध्यम से वर्तमान की अभिव्यक्ति राकेश अपने दो आरंभिक नाटकों के जरिये कर चुके थे, इसमें उन्होंने अपने युग की अभिव्यक्ति अपने युग और परिवेश के पात्रों के माध्यम से की है। विषम परिस्थितियों में उलझे पात्रों की मन: स्थिति की टकराहट उभरकर आयी है। आक्रोश और कुण्ठा की अभिव्यक्ति बड़े प्रभावशाली रूप में हुई है। पाँच सदस्यों का मध्यवर्गीय छोटा-सा- परिवार आर्थिक कठिनाइयों को झेलता है। उनमें इसकी वजह से तनाव उत्पन्न हो गया है और यह तनाव पति- पत्नी तक ही सीमित नहीं रहा बल्कि इसका फैलाव बच्चों तक भी हो गया है। और इस तनाव के मूल में अर्थ का अभाव है।

महेन्द्रनाथ नाटक का नायक है और वह आधा- अधूरा लगता है सावित्री को। सावित्री की इच्छाएँ बड़े रंगीन और बेलगाम हैं। महेन्द्रनाथ अब काम नहीं करता। घर पर पड़ा रहता है वह घर के सदस्यों के

द्वारा उपेक्षित किया जाता है। पत्नी काम करती है। कमाती है, पति को ताने कसती है। बच्चों के प्रति जिम्मेदारियों के अहसास के बावजूद अपनी इच्छाओं के दमन के लिए अपने ही प्रति कठोर नहीं हो पाती। जुनेजा उसकी दबी-छुपी इच्छाओं से परिचित है- "तुम्हारे लिए जीने का मतलब रहा। कितना कुछ एक साथ ओढ कर जीना" यह संवाद सावित्री के अन्दर दबी – छुपी परिचय कराता है।' एक समय में, एक साथ बहुत कुछ पा लेने की इच्छा उसमें है। इस सावित्री को सब पुरूष एक से लगते हैं, 'बिल्कुल एक से है आप लोग, अलग-अलग मुखौटे, पर चेहरा चेहरा सबका एक ही है।"

पति की आर्थिक असफलता के कारण एक मध्यवर्गीय छोटा सा परिवार टूट सा गया है, और घर परिवार में। केवल तनावपूर्ण वातावरण रह गया है। छोटी बच्ची किन्नी समाज के उन बच्चों की प्रतीक बनकर आती है जो माता- पिता की उपेक्षा का दंश झेलते हैं ओर जिन के विकास की तमाम सम्भावनाएँ धीरे- धीरे खत्म होती चली जाती हैं। वह जिददी और मुँहफट हो गयी है उसका बड़ा भाई अशोक आज की युवा पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करता है। वह उग्र है। स्थितियों और व्यक्तियों के प्रति व्यंग्य का भाव उसमें प्रबल हे। अभिनित्रियों की तस्वीरें काटना उसका शौक है। बिन्नी भी एक रात घर से भागकर माँ के एक प्रेमी मनोज से विवाह कर लेती है। बिन्नी- किन्नी और अशोक भाई बहन हैं। इनके संबंधों का माधुर्य भी समाप्त हो चुका है। सभी एक दूसरे के कमियों से परिचित हैं राकेश बड़ी संजीदगी से इनके विश्लेषण की दिशा में प्रवृत होते हैं-

'पैर तले की जमीन' राकेश का चौथा अन्तिम और अपूर्ण नाटक है, मौत के कगार पर खड़ा रहकर भी अयूब अपनी वासना को रीता नीरा द्वारा शांत करना चाहता है। इस नाटक में आत्याधुनिकता को दिखाया गया है व्यक्ति धन की लिस्पा या वासना पूर्ति को कैसे मृत्यु के समय में भी पाना चाहता है यह सब इसमें उभरकर आया है। पैर तले की जमीन में महानगर की क्लब संस्कृति की अभिव्यक्ति है।

क्लबों में जाने वाले लोग कैसे कैसे बहानों और साधनों की तलाश में रहते हैं यह अपने यथार्थ रूप में सामने आता हैं।

मोहन राकेश के नाटकों में पुरूष पात्र किसी एक रूप में प्रस्तुत नहीं होते या उनके एक रूप के दर्शन नहीं होते। बल्कि पुरूष के विविध रूप उनके नाटकों में प्राप्त होते हैं। उनके पुरूष पात्र किसी एक वर्ग व एक जाति से संबंध नहीं रखते, बल्कि वह अनेक रूप, अनेक वेश में हमारे सामने आते हैं।

राकेश के पुरूष पात्र अलग- अलग स्थितियों का सामना करते हुए जीवन जीते हैं। उनकी अलग-अलग मानसिक स्थितियां हैं, अलग अलग समस्याएं हैं, अलग-अलग द्वन्द्व हैं। मोहन राकेश के नाटकों में पुरूष अंतर्द्वन्द्व ही प्रमुख है क्योंकि उस अंतर्द्वन्द्व के कारण ही नायकों में आत्मसंघर्ष दिखायी देता है। 'आषाढ़ का एक दिन' का नायक कालिदास के बिना नाटक पूर्णत: को प्राप्त नहीं कर सकता था। 'लहरों के राजहंस' की नायक नन्द के माध्यम से आधुनिक समय के भोग–त्याग के बीच डोल रहे मनुष्य को चित्रित किया गया है। 'आधे- अधूरे' का नायक आधुनिक पुरूष के द्वन्द्व को उजागर करता है किस प्रकार असफलता के कारण पुरूष को उपेक्षित किया जाता है महेन्द्रनाथ के द्वारा प्रस्तुत किया गया है। पैर तले के जमीन में अत्याधुनिकता को अयूब के माध्यम से अभिव्यक्ति मिली है।

इस प्रकार मोहन राकेश के नायक नाटकों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। और मोहन राकेश के सभी नाटक नायकों के अभाव में 'आधे- अधूरे' हैं। नायकों की उपस्थिति ही नाटकों को आगे बढ़ाती है।

परिशिष्ट

आधार ग्रन्थ

1. राकेश, मोहन : आषाढ़ का एक दिन ,2010, ISBN 978-81-7028-409-3,राजपाल एंड सन्स,नई दिल्ली -110006

2. राकेश, मोहन : लहरों के राजहंस,1963,ISBN-81-267-0851-4,राजकमल,नई दिल्ली -110002

3. राकेश, मोहन : आधे-अधूरे,1972,राधाकृष्ण,नई दिल्ली-110002

4. राकेश, मोहन : पैर तले की जमीन,2009, राजकमल,नई दिल्ली -110002

संदर्भ ग्रन्थ

1. शर्मा, डॉ. नेहा : मोहन राकेश के साहित्य में नारी पात्र, ISBN-81-85727-62-7, प्रथम संस्करण-1999,दरियागंज, नई दिल्ली-110002

2. प्रसाद, डॉ. प्रसून : मोहन राकेश के नाटक :एक मूल्यांकन, ISBN -978-81-7675-209-1, प्रथम संस्करण-2008, आधार प्रकाशन,हरियाणा-134113

3. प्रकाश ,सरोज : स्त्री-पुरुष संबंधों के आइने में मोहन राकेश, ISBN -81-85-999-86-4, प्रथम संस्करण-2006, स्वराज प्रकाशन,दरियागंज,नई दिल्ली-110002

4. शुक्ल, डॉ. धीरेन्द्र : हिंदी नाट्य परिदृश्य, ISBN -81-7714-175-9, प्रथम संस्करण-2004, प्रकाशन संस्थान, दरियागंज,नई दिल्ली-110002

5. रॉय,मंजु:मोहन राकेश और उनके नाटकों के पात्र, ISBN-81-903775-2-3, संस्करण -2010, प्रकाशक अक्षर शिल्पी,शाहदरा, दिल्ली-110032

6. सुभान, डॉ.अब्दुल : मोहन राकेश के नाटकों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन , प्रथम संस्करण -2003, ISBN-81-7714-107-4, प्रकाशन संस्थान, दरियागंज, नई दिल्ली-110002